

डॉ. डेविड हॉवर्ड, जोशुआ-रूथ, सत्र 5

जोशुआ 1:10ff

© 2024 डेविड हॉवर्ड और टेड हिल्डेब्रांट

यह रूथ के माध्यम से जोशुआ पर अपनी शिक्षा में डॉ. डेविड हॉवर्ड हैं। यह सत्र 5, जोशुआ 1:10 और निम्नलिखित है।

अब हम अध्याय एक के अंतिम भाग को देखेंगे, जो श्लोक 10 से 18 तक है, और इसमें तीन अलग-अलग खंड शामिल हैं।

श्लोक 10 से 11 में लोगों के अधिकारी को यहोशू के शब्द, जॉर्डन के पूर्व में बसने जा रहे जनजातियों के लिए उसके निर्देश, ट्रांसजॉर्डन जनजातियाँ जिन्हें वे रूबेन, गाद, मनश्शे की आधी जनजाति कहते हैं, और फिर छंदों में 16 से 18, यहोशू को लोगों की प्रतिक्रिया। तो, आइए जोशुआ द्वारा अधिकारियों पर लगाए गए आरोप पर नजर डालें। श्लोक 10 से 11 में, वह उनसे कहता है कि वे शिविर से होकर गुजरें और तैयार हो जाएँ।

और तीन दिनों के भीतर, वे कब्जा करने के लिए जॉर्डन पार करने जा रहे हैं। यह भूमि की विरासत के लिए एक और शब्द है। श्लोक 11 के अंत में ध्यान दें, यह कहता है, यह वह भूमि है जिसे प्रभु तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें दे रहा है।

वहाँ वह है जो आपको अधिकार देने, कब्जा लेने के लिए दे रहा है। तो, विरासत के लिए एक शब्द है। तो यहां तक कि जिन विषयों पर हमने बात की, वे सात विषय, किताबों के ताने-बाने से लेकर छंदों के विशिष्ट शब्दों तक एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।

तो, कल्पना कीजिए कि भगवान ने यहोशू को कार्यभार सौंपा है। यहोशू फिर नेताओं की ओर मुड़ता है और कहता है, यहाँ, जाने के लिए तैयार हो जाओ, अपने लोगों को बदलो। अब से तीन दिन बाद, हम जॉर्डन पार करने जा रहे हैं।

फिर वह लोगों के दूसरे समूह की ओर मुड़ता है। और यह वह समूह है जो जॉर्डन के पूर्व में बसना चाहता था। और मैं जल्दी से आपके लिए यहां एक नक्शा रखूंगा।

जब वे उन 40 वर्षों के दौरान जंगल में और यहाँ से बाहर भटक रहे थे, तो ढाई जनजातियों ने देखा कि पूर्व की भूमि बहुत उपजाऊ थी और उन्हें यह पसंद आया। और उन्होंने मूसा से पूछा कि क्या वे वहाँ बस सकते हैं। और इसकी कहानी संख्या अध्याय 32 में बताई गई है।

इसलिए, मैं आपको संख्या अध्याय 32 की ओर जाने के लिए आमंत्रित करूंगा। और हम यहां कुछ चीजों पर प्रकाश डालेंगे। लगभग पूरा अध्याय इसी अनुरोध के प्रति समर्पित है।

और आप गिनती 32 में देखते हैं, श्लोक एक, यह कहता है, रूबेन के लोगों और गाद के लोगों के पास बहुत बड़ी संख्या में पशुधन थे। उन्होंने याजेर और गिलाद का देश देखा। और देखो, वह स्थान पशुओं का स्थान था।

और इसलिए, वे मूसा के पास आए और पूछा कि क्या वे वहां बस सकते हैं। और श्लोक छह और उसके बाद में मूसा की प्रारंभिक प्रतिक्रिया क्रोधित होने की है क्योंकि वह सोचता है कि वे जो कर रहे हैं वह कनान भूमि के साथ आने वाले संघर्षों से बचना चाहते हैं। वे अपने कर्तव्यों से बाहर निकलने की कोशिश कर रहे हैं।

और इसलिए, वह उनसे कहता है, यह अच्छी बात नहीं है। और यह काफी पैराग्राफ तक जाता है। और फिर श्लोक 16 और उसके बाद, लोगों ने उत्तर दिया, कहा, नहीं, हम विश्वासयोग्य रहेंगे।

हम हर किसी के साथ हथियार उठाएंगे।" और हमारी पत्नियाँ और छोटे बच्चे यहाँ रह सकते हैं, परन्तु हम वहाँ जायेंगे। और इसलिए, पद 20 में मूसा कहता है, यदि तुम ऐसा करोगे, यदि तुम युद्ध आदि के लिए प्रभु के सामने जाने के लिए हथियार उठाओगे, तो तुम लौट आओगे, पद 22, और प्रभु के प्रति दायित्व से मुक्त हो जाओगे और इस्राएल और यह देश यहोवा के साम्हने तुम्हारी निज भूमि ठहरेंगे।

और शेष अध्याय उसी का परिणाम है। तो यह उन ढाई जनजातियों के लिए यहोशू के शब्दों की पृष्ठभूमि है जो जॉर्डन के पूर्व में बसना चाहते हैं। मूसा लोगों को व्यवस्थाविवरण 3 में इसकी याद दिलाता है। और यदि आप इसे कभी देखना चाहें, तो श्लोक 18 से 20, व्यवस्थाविवरण 3 लगभग शब्द दर शब्द हैं, जोशुआ 1, श्लोक 12 से 15 में शब्दों की आशा करते हैं।

यहां व्यवस्थाविवरण 3:18 में आपको इसके बारे में कुछ पढ़ने के लिए, मूसा कहता है, "मैंने उस समय तुम्हें आदेश दिया था," संख्या 32 की घटना का जिक्र करते हुए, "कह रहा था, हे प्रभु, तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें यह भूमि अधिकार में लेने के लिए दी है। तुम्हारे सभी वीर लोग तुम्हारे भाइयों, इस्राएल के लोगों के सामने हथियारबंद होकर पार हो गए हैं। केवल तुम्हारी पत्नियाँ, तुम्हारे बाल-बच्चे, और तुम्हारे पशु उन नगरों में रहेंगे जो मैंने तुम्हें दिए हैं जब तक यहोवा तुम्हें विश्राम न दे। और फिर तुम अपनी भूमि पर वापस जा सकते हो।"

वे शब्द संख्या 32 को प्रतिध्वनित कर रहे हैं और यहोशू 1 को भी चित्रित कर रहे हैं। तो यहोशू 1 पर वापस जाएँ। तो, श्लोक 12 में, यह कहता है, रूबेनियों, गादियों, मनश्शे के आधे गोत्र के लिए, यहोशू ने कहा, उस वचन को याद करो जो मूसा ने कहा है प्रभु की ओर संकेत किया, क्योंकि उस ने तुम्हें कहने की आज्ञा दी। और फिर श्लोक 13 से 15 लगभग व्यवस्थाविवरण 3 के अनुच्छेद के शब्द दर शब्द हैं। अब, मैंने उल्लेख किया है कि अध्याय 1 में भाषणों के चार खंड हैं। मैं आपको इसका एक दृश्य प्रतिनिधित्व देता हूँ।

इसलिए, मैंने इसे यहाँ इन वर्गों के साथ रखा है जिन्हें हम कथात्मक ढाँचा कहेंगे। वहाँ, जब पुस्तक का लेखक कह रहा है, यहाँ बताया गया है कि इस व्यक्ति ने किससे बात की और किससे बात की, हम इसके बारे में शायद अध्याय की रीढ़ की हड्डी के रूप में सोच सकते हैं। लेकिन

फिर ये बक्से यहां वास्तविक शब्द हैं, मूसा के लिए भगवान के शब्द, मूसा के शब्द, मुझे क्षमा करें, यहोशू के लिए भगवान के शब्द, लोगों के बुजुर्गों के लिए यहोशू के शब्द, यहोशू के शब्द ट्रांसजॉर्डन जनजातियाँ, और फिर जोशुआ के प्रति लोगों की प्रतिक्रिया।

तो यह कथात्मक रूपरेखा है। अब, कई टिप्पणीकार इसका तर्क देखते हैं और देखते हैं कि जब जोशुआ ट्रांसजॉर्डन जनजातियों से बात करता है, तो यहां जोशुआ के शब्दों पर ट्रांसजॉर्डन जनजातियों की प्रतिक्रिया होती है। लेकिन मैं तर्क दूंगा कि यह प्रतिक्रिया देने वाला एक अलग समूह है।

इन तीन जगहों पर बोलने वाले लोगों की पहचान नाम से की जाती है। यह परमेश्वर यहोशू से बात कर रहा है, यहोशू बड़ों से बात कर रहा है, और यहोशू ट्रांसजॉर्डन जनजातियों से बात कर रहा है, लेकिन पद 16 में यह कहा गया है, और उन्होंने उत्तर दिया। यहोशू यह निर्दिष्ट नहीं करता कि "वे" कौन हैं।

और एक स्तर पर, निश्चित रूप से, यह समझ में आता है कि "वे" ट्रांसजॉर्डन जनजातियाँ होंगी। लेकिन कथा ढांचे का हिब्रू वाक्य-विन्यास, आम तौर पर हिब्रू में, आप में से कुछ लोग जानते हैं, यदि आप हिब्रू जानते हैं, तो आप जानते हैं कि वहां चीजों की एक लगातार श्रृंखला होती है जहां यह हुआ और फिर वह हुआ और फिर वह हुआ और इसी तरह पर। और यह एक प्रकार का डिफ़ॉल्ट मोड है।

यह हिब्रू कथा की रीढ़ है। यदि वह पैटर्न टूट गया है, तो आमतौर पर वहां कुछ न कुछ चल रहा है। और वह पैटर्न यहीं टूट गया है।

श्लोक 12 में कथा या क्रिया रूप और वाक्यविन्यास विभक्ति प्रकार का है। और मैं तर्क दूंगा कि यह जो कर रहा है वह हमें बता रहा है कि भाषण के ये दो खंड एक साथ चलते हैं। तो, जोशुआ ने लोगों के कार्यालय से बात की और ओह, वैसे, उन्होंने ट्रांसजॉर्डन जनजातियों से भी बात की और जो जवाब दे रहे हैं, "वे" हर कोई है, न कि केवल ढाई जनजातियाँ।

और इसलिए, यहोशू को प्रतिक्रिया नेताओं, सभी जनजातियों के प्रतिनिधियों द्वारा यह कहते हुए दी गई है, हां, आपने हमें जो आदेश दिया है हम उसके प्रति वफादार रहेंगे। यह केवल जनजातियों का एक छोटा सा हिस्सा नहीं है, बल्कि पूरा देश प्रतिक्रिया दे रहा है। उस अर्थ में, उस तरीके से, अन्यथा, हमारे पास उस पुस्तक में कोई जगह नहीं है जहां पूरा देश यहोशू को अपने नेता के रूप में पुष्टि करता है।

लेकिन श्लोक 12 में व्याकरणिक पैटर्न के कारण, मैं तर्क दूंगा कि श्लोक 11 और फिर 12 से 15, 13 से 15 में जोशुआ के दो भाषण एक ही घटना के अभिन्न अंग हैं। और उनकी कल्पना वस्तुतः एक ही चीज़ की तरह की गई है। और तब प्रतिक्रिया उस भाषण में संबोधित सभी लोगों द्वारा होती है।

तो मैं इसे इसी तरह देखूंगा। इसलिये पद 16 में उन्होंने यहोशू को उत्तर दिया, कि जो कुछ तू ने हमें आज्ञा दी है हम उसे करेंगे। आप हमें जहां भी भेजेंगे, हम जायेंगे।

जैसे हम ने सब बातों में मूसा की आज्ञा मानी, वैसे ही तेरी भी आज्ञा मानते हैं। केवल प्रभु तुम्हारे साथ रहें। तो, यह पूरी जनजाति, पूरे राष्ट्र द्वारा जोशुआ की एक अद्भुत पुष्टि है।

जब मैं इन छंदों को पढ़ता हूँ तो मैं अक्सर हंसता हूँ क्योंकि मुझे लगता है कि उनका इरादा अच्छा था, लेकिन मुझे लगता है कि उनके शब्द उनके इरादे को थोड़ा कमजोर कर देते हैं क्योंकि यह कहता है, जैसे हमने सभी चीजों में मूसा की आज्ञा का पालन किया। कल्पना कीजिए कि जोशुआ सोच रहा है, ठीक है, अगर यह मानक है, तो यह काफी निम्न मानक है। उन्होंने मूसा की आज्ञा का पालन अच्छी तरह नहीं किया।

मुझे उससे भी अधिक चाहिए। लेकिन इसकी परवाह किए बिना, उनका इरादा यही था। और वे कहते हैं, कि जो कोई तुझ से बलवा करेगा, वह आयत 18 में मार डाला जाएगा।

और फिर अंततः, केवल मजबूत और साहसी बनें। तो, पूरे अध्याय में हमारे पास वह मजबूत और साहसी विषय है, भगवान के शब्दों में तीन बार। और फिर इसका निष्कर्ष खुद लोगों ने भी जोशुआ की पुष्टि करते हुए निकाला।

यह रूथ के माध्यम से जोशुआ पर अपनी शिक्षा में डॉ. डेविड हॉवर्ड हैं। यह सत्र 5, जोशुआ 1:10 और निम्नलिखित है।